अस्तित्व की तलाश

अंतर्मन में झाँकने का प्रयास

काव्य संग्रह

श्वेता सिंह

₹200/-

ISBN : 978-93-94667-47-1

प्रथम संस्करण : 2024

सर्वाधिकार © श्वेता सिंह

अस्तित्व की तलाश : काव्य संग्रह

मुद्रण एवं प्रकाशन

अंजनी प्रकाशन

हालीशहर, उत्तर 24 परगना, पश्चिम बंगाल, कोलकाता-743135

सम्पर्क : 033-25880039, +91 8820127806

anjaniprakashan19@gmail.com

ASTITWA KI TALASH

POEM WRITTEN BY SHWETA SINGH

श्वेता सिंह एक परिचय

श्वेता कुमारी जी का जन्म सामान्य मध्य वर्गीय परिवार में हुआ। उनके पिता पेशे से सहायक इंजीनियर तथा माँ गृहिणी है। उन्होंने अपनी शिक्षा-दीक्षा अपने पिता के सानिध्य में प्राप्त की। वे एक प्रतिष्ठित वित्तीय संस्थान में कार्यरत हैं। वे पिछले एक दशक से काव्य लेखन में सक्रिय है। नारी वेदना, नारी चिंतन तथा समाज की कुरीतियों से प्रभावित होकर उन्होंने अपने विचारों को कलम देना प्रारम्भ किया । अस्तित्व की तलाश (काव्य संग्रह) यह आपकी पहली पुस्तक है।

भूमिका

मैंने यह काव्य संग्रह "अस्तित्व की तलाश" स्वयं के अनुभवों, परिस्थितियों तथा जीवन के उतार चढ़ावों से प्रेरित हो कर लिखी है। ये काव्य अंतर्मन में झाँकने के प्रयासों से स्फुटित हुआ है। यह संग्रह मेरे हृदय के काफी निकट है एवं मुझे यह पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक आपके हृदय में भी अपना स्थान अवश्य बनाने में कामयाब होगी।

"अस्तित्व की तलाश" काव्य संग्रह का आधार ही अस्तित्व है। ब्रह्मांड में स्थित हर एक जीव का अपना अस्तित्व है और यह अस्तित्व ही उनके होने का एहसास दूसरों को करवाता है। मेरा मानना है कि ईश्वर की सबसे खुबसूरत रचना नारी है। नारी श्रृंगार, सौंदर्य, प्रेम, त्याग व मातृत्व का अविलक्षन उदहारण हैं। हर रूप में स्वयं को ढ़ाल लेने वाली नारी कभी-कभी खुद के लिए ही ढ़ाल नहीं बन पाती। ऐसी परिस्थितियों से नारी हृदय में उत्पन्न वेदना को यह काव्य संग्रह उजागर करता है।

यह पुस्तक आपको जीवन की ऐसी यात्रा पर ले जाएगा जो पूरी तरह रोलर कास्टर से भरा है। कभी समर्पण भाव से आपका मन ओत-पोत होगा तो कभी जीवन में पुत्री के होने के एहसास से

आपको प्रफुल्लित करेगा तो कभी मातृभाषा के प्रति आपके नेत्रों को छलका जाएगा तो कभी आत्मसम्मान की ऊर्जा से आप भर जाएंगें तो कभी अपने आराध्य से आपकी नाराजगी को दर्शाएगा तो कभी देश प्रेम से आपको ऊर्जायामन कर जाएगा कभी रोजगार का महत्त्व आपको समझा जाएगा तो कभी बचपन की मिठास में आपको डुबो देगा तो कभी घर का महत्व आपको समझा जाएगा। ऐसे ही अनेक भावों से यह पुस्तक संग्रहीत है।

आशा है स्नेह से समर्पित यह काव्य संग्रह आपको प्रफुल्लित तथा ऊर्जायमान करें।

श्वेता सिंह

लेखिका

फरवरी, 2024

अस्तित्व की तलाश : स्त्रीत्व का स्वर

"अस्तित्व की तलाश" शीर्षक से प्रकाशित कविता संग्रह, कवयित्री स्वेता सिंह द्वारा रचित स्त्रीत्व का एक मार्मिक चित्रण है। अपनी कविताओं के माध्यम से, स्वेता न केवल स्त्री के संघर्षों को उजागर करती हैं, बल्कि उसकी आंतरिक शक्ति और आत्मविश्वास को भी दर्शाती हैं। यह स्त्री की आवाज का एक नया और शक्तिशाली संग्रह है। इन पंक्तियों में स्त्री अपने अस्तित्व, अपनी पहचान और अपनी आवाज की तलाश करती है।

"कमजोर हूँ फिर भी तेरे लिए खड़ी हूँ" – स्त्री अपनी कमजोरियों को स्वीकार करते हुए भी अपनी ताकत का प्रदर्शन करती है। वह पुरुषों के बराबर खड़ी होने का दावा करती है, भले ही वह उनसे अलग हो।

"रोजमर्रा की भाषा हमारी रोजगार की भाषा है, राजभाषा ही हमारे अधिकार की भाषा है" – स्त्री अपनी भाषा के महत्व पर जोर देती है। वह कहती है कि रोजमर्रा की भाषा में ही उसकी रोजगार और अधिकारों की बातें छिपी हैं।

"हमने अपनों को पराया होते देखा है, परायों में हमने अपनापन देखा है"– स्त्री रिश्तों की बदलती प्रकृति पर टिप्पणी करती है। वह कहती है कि कैसे अपनों के बीच दूरियां बढ़ रही हैं और परायों के बीच अपनापन दिख रहा है।

"सच-सच बताओं ओ कान्हा पुकार मेरी जाती नहीं, कुंड में कूद जौहर भी कर लिए, फिर भी आप आते नहीं" – स्त्री अपनी भावनाओं को व्यक्त करती है। वह कहती है कि कैसे उसकी पुकार अनसुनी रहती है और उसकी प्रार्थनाएं स्वीकार नहीं की जाती हैं।

"संवेदनाओं का यह सफर है, भावनाओं का यह लहर है, हमने

जो चाहा वहीं यह पहर है, साथ में तेरे हर एक सफर है"– स्त्री जीवन के उतार-चढ़ाव को स्वीकार करती है। वह कहती है कि जीवन भावनाओं का एक सफर है और हर पल अनमोल है।

"गुजरते वक्त के साथ जीना सीखा है हमने, ठोकरों से सम्भलना सीखा है हमने, जख्मों से दवा करना सीखा है हमने आँसुओं से मुस्कुराना सीखा है" – स्त्री जीवन के कठिन अनुभवों से सीखती है। वह कहती है कि कैसे उसने मुश्किलों का सामना करना और उनसे आगे बढ़ना सीखा है।

"अस्तित्व की तलाश" स्त्री जीवन का एक काव्यात्मक चित्रण है। यह कविता संग्रह स्त्री की भावनाओं, संघर्षों, सपनों और आकांक्षाओं को दर्शाता है। कवयित्री ने अपनी रचनाओं में स्त्री जीवन के विभिन्न पहलुओं को बड़ी ही खूबसूरती से उकेरा है। यह कविता संग्रह उन सभी लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत है जो स्त्री जीवन को समझना चाहते हैं।

कुल मिलाकर, "अस्तित्व की तलाश" स्त्री के जीवन का एक समग्र चित्रण है। यह स्त्री के संघर्षों, उसकी भावनाओं और उसकी आंतरिक शक्ति को दर्शाता है। कवयित्री स्वेता सिंह स्त्रीत्व के स्वर को बखूबी व्यक्त करती हैं और अपनी कविताओं के माध्यम से स्त्री सशक्तिकरण का संदेश देती हैं।

यह पुस्तक उन सभी पाठकों के लिए अनुशंसित है जो स्त्री जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझना चाहते हैं। यह उन महिलाओं के लिए भी प्रेरणादायी पुस्तक है जो जीवन में अपनी पहचान और अस्तित्व की तलाश में हैं।

सादर धन्यवाद...

नन्दलाल साव
प्रकाशक, अंजनी प्रकाशन
हालीशहर, कोलकाता
पश्चिम बंगाल, मो. 8820127806

अनुक्रम

1	अस्तित्व की तलाश	1
2	बेटियाँ क्या हैं?	2
3	राजभाषा	3
4	हालात बुरे हो तो क्या	4
5	तू मेरे मन का उपवन है	5
6	सच सच बताओं ओ कान्हा	6
7	जिंदगी की सरगम पर	8
8	बचपन	9
9	यादों का घरौंदा	10
10	कैसा है ये स्वामित्व !	11
11	एहसास	12
12	धीरे धीरे सिख रहें हैं	13
13	हौसला	14
14	स्वाभिमान	15
15	माँ सब जानती है	16
16	समय	17
17	वक़्त	18
18	जिन्दगी जन्नत हुई	19
19	रिश्तों की मर्यादा रखना	20
20	मेरे राम	22
21	ईश्वर तुझे दीर्घायु करें	23
22	दिखा है चाँद अम्बर में	24
23	खर्च कर दिया	25
24	दूर	26

25	मातृ दिवस की शुभकामनाएं	27
26	अंतर्मन	28
27	ऐ दोस्त	29
28	बात बात पर नहीं बिगड़ते	30
29	अपनी मर्जी के मुताबिक चलती है जिंदगी	31
30	कब ऐसा चाहा मैंने	32
31	एक दौर थी जिंदगी !	33
32	कभी मोहब्बत में दगा ना देना	34
33	सजा	35
34	मुझसे न छीन लें	36
35	ख़्वाबों के टूटने की आहट	37
36	दीप जलाए बैठी हूँ	38
37	मुस्कुराता चेहरा	39
38	तुझे भूलूँ कैसे	40
39	भावनाओं का एक द्वार है	41
40	ऐ दुनिया के ठेकेदारों	42
41	हे गोविंद!	43
42	खुशियों का सूर्य उदय	44
43	कभी-कभी	45
44	नववर्ष	46
45	काट कर फेंक दिया है	47
46	धोखा	48
47	साथ	49
48	आँसुओं के चाशनी में	50
49	दुआ	50
50	तुम्हें पता भी नहीं चलेगा	51

51	इन दिनों	52
52	प्रिय	52
53	तुमने बिखेरा है हमको संवारा नहीं	53
54	लगता तो नहीं	54
55	खुद पर काम करो	55
56	कहीं भी घर बना लो	56
57	टूटी थी जब	57
58	बेवजह	58
59	जिंदगी का गुजारा	59
60	वतन तू आबाद रहें	60
61	मोहब्बत	61
62	जोश के साथ होश होता है	62
63	पिता	63
64	आहिस्ता आहिस्ता	64
65	मुझको तेरी जरूरत	65
66	जिंदगी हम तेरे मजदूर हैं	66
67	सजाकर रखना होता है	67
68	मौत	68
69	अपने अंदर झाँक के देखा	69
70	मन की केतली को	70
71	बात	70
72	हे राम!	71
73	मेरे प्यार के कारण	72
74	हकीकत	72
75	घर	73
76	जिंदगी मेरी	74

77	आए हो	74
78	सुना है	75
79	वादा	75
80	हम तेरे हैं	76
81	आप मिल जाइए	77
82	किसका रास्ता देख रहे हो	78
83	आदमी कितना मजबूर है	79
84	क्यों तेरा प्यार मेरे प्यार जैसा नहीं	80
85	घर तनहाई से भर गया है	81
86	एक रंग	82
87	कैद हो जा अपने जीवन के लिए	83
88	सोचे मन बार बार, ढूंढें दिल बार बार	84
89	तूने बसाया है	85
90	कुछ इस तरह तेरा कर्ज अदा करता हूँ	86
91	कह दे	87
92	निराशा के समय	88
93	अपनी बात पर टिके रहो	88
94	शायरी	89-99
95	वजूद	100

अस्तित्व की तलाश

कमजोर हूँ फिर भी तेरे लिए खड़ी हूँ
मैं तुम जैसी नहीं फिर भी तुझ में हूँ
मैं अस्तित्व हीन ही सही फिर भी मेरा अंश तुझ में है
मैं अकेली ही सही, फिर भी तेरे मेलों में शामिल हूँ
मैं अज्ञानी ही सही, फिर भी तेरे ज्ञान रूपी प्रकाश में हूँ
मैं शक्ति हीन ही सही फिर भी तेरी शक्ति का कारण हूँ
मैं लाख पाबंदियों से घिरी फिर भी तेरी आजादी का कारण हूँ
हाँ मैं नारी हूँ अपने अस्तित्व की तलाश में...

बेटियाँ क्या हैं?

बेटियाँ क्या है?
जीवन के रेगिस्तान में गुलिस्तां
कभी माँ का आँचल तो कभी पापा की सख्सियत

गीली आँखों पर सुकून का काजल
कभी दादी-नानी की कहानियों सी खूबसूरत

उजड़े घरौंदे में खुशी की लहर
कभी यादों की हिचकी तो कभी सुराही का पानी

चहके तो ऐसे जैसे नन्हीं सी चिड़िया
कभी चूल्हें का धुआं तो कभी दफ्तर का रौब

रूठे तो ऐसे जैसे छोटी सी गुड़िया
कभी माँ की हमजोली तो कभी पिता की लाठी

मम्मी का चिमटा तो पापा का छाता
कभी नानी सी सयानी तो कभी बच्चों सी नादानी

भैया की राखी तो भाभी का गहना
ओ बेटी तेरे संग जीवन का क्या कहना

राजभाषा

रोजमर्रा की भाषा हमारी रोजगार की भाषा है
राजभाषा ही हमारे अधिकार की भाषा है
ये हमारे ज़मीर की भाषा है
ये पूर्वजों के अभिमान की भाषा है

ये आलाप की भाषा है, ये विलाप की भाषा है
ये हमारे ह्रदय की भाषा है, ये उद्घोष की भाषा है,
ये मेरे तेरे बीच संपर्क की भाषा है
ये स्वाभिमान की भाषा है, ये क्रांति की भाषा है

ये जज्बातों की भाषा है, ये मोहब्बत की भाषा है
ये तेरे मेरे साथ की भाषा है, ये हमारे सोच की भाषा है।